Roll No. : .....

Total No. of Questions : **11**] [Total No. of Printed Pages : **4**

ED–2076 (A)

B.A. B.Ed. (IInd Year) Examination, 2022

HINDI

Paper - I (CC-1)

(रीतिकालीन काव्य)

*Time : **3** Hours*] [*Maximum Marks : **80***

खण्ड–अ **(अंक : 2 × 10 = 20)**

नोट :– सभी **दस** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **50** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **2** अंक का है।

खण्ड–ब **(अंक : 6 × 5 = 30)**

नोट :– सभी **पाँच** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक प्रश्न में विकल्प का चयन कीजिए (उत्तर-सीमा **200** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **6** अंक का है।

खण्ड–स **(अंक : 10 × 3 = 30)**

नोट :– पाँच में से किन्हीं **तीन** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **500** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **10** अंक का है।

खण्ड–अ

1. सभी **दस** प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

   (i) किन्हीं **दो** रीतिबद्ध कवियों के नाम लिखिए।

   (ii) कठिन काव्य का प्रेत किस कवि को कहा गया है ?

(iii) 'नहिं पराग नहिं मधुर मधु, नहिं विकास इहि काल' काव्य पंक्ति के रचयिता कवि कौन हैं ?

(iv) प्रतिभा को प्रमुख काव्य हेतु क्यों माना गया है ?

(v) रीतिकाल में वीररस की कविता लिखने वाले कवि कौन हैं ?

(vi) कवि देव की किन्हीं **तीन** रचनाओं के नाम लिखिए।

(vii) घनानंद को स्वच्छंदतावादी कवि क्यों कहा गया है ?

(viii) रूपक अलंकार की परिभाषा उदाहरण सहित लिखिए।

(ix) काव्य प्रयोजन किसे कहते हैं ?

(x) केशवदास की रामचन्द्रिका की विशेषताएँ लिखिए।

खण्ड–ब

नोट :– सभी **पाँच** प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

2. बतरस लालच लाल की मुरली धरी लुकाइ।
सौंह करे भौहनु हंसै दैन कहे नटि जाइ॥

अथवा

घनआनंद जीवनमूल सुजान की कौंधन हूँ न कहूँ दरसैं।
सु न जानियै धौं किन छाय रहे दृग-चातिक प्रान तपे तरसे
बिन पावस तौं इत थ्यावस हो न, सु क्यौं करिये अब सो परसैं।
बदरा बदसे रिति मैं घिरि कै नित ही आँखिन उघरी बरसै।

3. कुंदन को रंग फीको लागे
झलकै अति अंगनि चारु गोराई
आखिन में अलसानि चितौन में
मंजु विलासनि की सरसाई
को बिनु मोल बिकात मही
मतिराम लहै मुस्कानि मिठाई
ज्यौं-ज्यौं निहारिए नेरे नैननि
त्यों त्यों खरी निकरै सी निकाई॥

अथवा

जपमाला, छापा, तिलक सरै न एकौ काम।

मन-कांचै नाचै वृथा, सांचै रांचै रामु॥

4. कीने हूँ कोरिक जतन अब कहि काढ़ै कौनु।

भो मन मोहन-रूपु मिलि पानी मैं को लौनु॥

अथवा

कौन के सुत बालि के, वह कौन बालि न जानिये।

कोख चापि तुम्हें जो सागर सात न्हात बखानिये॥

5. इन्द्र जिमि जंभ पर, बाड़व सुअंभ पर

रावन सदंभ पर रघुकुलराज हैं।

पौन वारिवाह पर संभु रतिनाह पर

ज्यों सहस्रबाहु पर राम द्विजराज है।

दावा द्रुमदंड पर चीता मृगझुंड पर

त्यों मलेच्छ वंश पर सेर शिवराज हैं।

अथवा

दीरघ साँस न लेई दुख सुख साँई नहीं भूल

दई-दई क्यों करत है, दई-दई सो कबूल।

6. भूलन ही की अधोगति केशव गाइय

होम हुतासन धूम नगर एकै मलिनाइय

दुर्गति दुर्गन ही जो कुटिलगति सरितन ही में

श्रीफल को अभिलाष, प्रगट कविकुल के जी में।

अथवा

तंत्री नाद कवित्त रस सरस राग रति रंग।

अनबूड़े बूड़े तिरे जे बूड़े सब अंग॥

खण्ड–स

नोट :– पाँच में से किन्हीं **तीन** प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

7. भारतीय काव्यशास्त्र में लक्षण ग्रंथों की रचना रीतिकाल में हुई। कथन की समीक्षा कीजिए।

अथवा

कवि बिहारी को मूलतः शृंगारी कवि माना है। बिहारी सतसई के आधार पर मूल्यांकन कीजिए।

8. रीतिकाल में नारी भावना पर विचार व्यक्त कीजिए।

अथवा

दरबारी संस्कृति में रचित काव्य में ब्रजभाषा पर टिप्पणी लिखिए।

9. काव्य हेतु एवं काव्य प्रयोजन में क्या अन्तर है ? स्पष्ट करते हुए भेदों का उल्लेख कीजिए।

अथवा

कवि घनानंद के काव्य की विशेषताएँ लिखिए।

10. रीतिकाल में कवि केशवदास की रामचन्द्रिका का महत्त्व स्पष्ट कीजिए।

अथवा

कवि भूषण ने अपनी कविता में वीररस की अभिव्यक्ति की है। सिद्ध कीजिए।

11. रीतिकाल की कविता में विरह वर्णन की प्रधानता है। स्पष्ट कीजिए।

अथवा

रीतिकाल की कविता में अलंकारों को विशेष स्थान मिला है। समझाइए।